



शारीरिक शिक्षा के संदर्भ में नई शिक्षा नीति 2020 का अध्ययन

अरविन्द कुमार यादव

शोधार्थी

रबीन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय, भोपाल।

सार

एनईपी 2020 में खेलों को अंग्रेजी या विज्ञान जैसे अन्य विषयों की तरह ही महत्वपूर्ण माना गया है। शारीरिक शिक्षा और खेल बच्चों के स्वास्थ्य, खुशी और रोग प्रतिरोधक क्षमता को विकसित करते हैं। नई एनईपी में कई महत्वपूर्ण घटक हैं जो बच्चों के समग्र विकास के लिए आवश्यक हैं। जुलाई में केंद्रीय मंत्रिमंडल द्वारा राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 को मंजूरी दी गई थी। एनईपी ने शारीरिक और खेल को उनके शिक्षा पाठ्यक्रम के अभिन्न अंग के रूप में शामिल किया है। एनईपी 2020 में खेल को अन्य सह-पाठ्यक्रम गतिविधियों के हिस्से के रूप में शामिल किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन में शोधार्थी द्वारा शारीरिक शिक्षा के संदर्भ में नई शिक्षा नीति 2020 का अध्ययन किया गया है जिसमें नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति में शारीरिक शिक्षा की वर्तमान स्थिति पर प्रकाश डाला गया है।

कुंजी शब्द: शिक्षक शिक्षा, विद्यालयी शिक्षा, शिक्षा नीति, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020।

प्रस्तावना

शिक्षा के क्षेत्र में खेलों की बहुत आवश्यकता है। विद्यार्थी का काम रात-दिन केवल किताबें रटकर पास होना ही नहीं है अपितु शरीर को स्वस्थ रखना भी उतना ही आवश्यक है जितना कि पढ़ना। जो विद्यार्थी अध्ययन के साथ खेलों में भाग नहीं लेते हैं, वे कागजी पहलवान बनकर रह जाते हैं। उनकी दशा देखकर बड़ी दया आती है। यदि वे अपना कुछ समय खेल में भी लगाते, तो उनकी यह दयनीय दशा कभी न होती। पढ़ते-पढ़ते थक जाने पर मस्तिष्क को फिर से ताजा बनाने के लिए खेल-कूद आवश्यक है। प्रायः खेल में भाग लेने वाले विद्यार्थी पढ़ने में निपुण होते हैं। वास्तव में खेल के महत्व को खिलाड़ी ही समझ सकते हैं। जब खिलाड़ी खेल के मैदान में आता है, उस समय संसार के समस्त झंझटों से मुक्त हो जाता है। उसका लक्ष्य खेलना होता है – बस खेलना और कुछ नहीं। हार्न खिलाड़ियों के सुन्दर शारीरिक गठन को देखकर खेलों के महत्व को समझा जा सकता है। खेलों के महत्व को दृष्टि में रखकर ही स्कूलों में अध्ययन के साथ-साथ खेलों को विशेष स्थान दिया गया है, परन्तु खेल केवल खेल की भावना से खेलने चाहिए। हार और जीत का खेल में कोई महत्व नहीं होता। खेल को जीतने से खिलाड़ी को शिक्षा मिलती है कि जीवन में सफलता पर घमंड नहीं करना चाहिए। खेल की हार खिलाड़ी को असफलता में हिम्मत न हारने की प्रेरणा देती है।

खेलों से हमें बहुत-से लाभ होते हैं। खेलने वाले छात्र को आलस्य नहीं घेर पाता। खेलों से बुद्धि विकसित होती है और शरीर सुन्दर एवं सुगठित हो जाता है। अनुशासन एवं एकता की भावना पैदा होती है। सहपाठियों में प्रेम का संचार होता है। कार्य को शीघ्रता से करने की आदत पड़ जाती है। ईमानदारी व न्याय से कार्य करने की शिक्षा मिलती है और चरित्र का निर्माण होता है। शरीर स्वस्थ होने से विद्याध्ययन में खूब मन लगता है। महात्मा गांधी कहा करते थे – “स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क का वास होता है।” इसके अतिरिक्त खेलों से और भी लाभ होते हैं, जैसे – घमंड न करना, हारने पर भी हिम्मत न हारना, एकता की भावना का विकास व सही निर्णय लेने की क्षमता विकसित होना आदि।

शिक्षा में खेलों का विशेष महत्वपूर्ण स्थान है। इन दोनों का साथ-साथ चलना अधिक लाभदायक है। केवल शिक्षा ग्रहण करने वाला मनुष्य डरपोक, दुर्बल, आलसी और कायर बन जाता है। इस प्रकार केवल खेलों में भाग लेने वाला व्यक्ति भी अपने सफल नहीं हो पाता। यदि शिक्षा और

खेल दोनों का उचित मेल कर दिया जाये तो सोने में सुगंध हो जायेगी। आजकल ऐसी शिक्षा पद्धति का आविष्कार हो रहा है जिसमें खेल के माध्यम से भी शिक्षा दी जाती है, क्योंकि बचपन में बालक पढ़ाई की अपेक्षा खेल को अधिक पसन्द करते हैं। बच्चा निष्क्रिय होकर नहीं बैठ सकता। उसे ऐसा काम मिलना चाहिए, जिससे वह सक्रिय रह सके। इसके लिए शिक्षा में खेल पद्धति को अपनाया गया है। कहने का तात्पर्य यह है कि शिक्षा और खेल में परस्पर गहरा सम्बन्ध है।

अधिगम प्रक्रिया में अभिप्रेरणा बहुत आवश्यक है। लोगों को सीखने के लिए प्रेरित किया जा सकता है, लेकिन अगर वे सीखने के लिए प्रेरित नहीं हैं, तो वे नहीं सीखेंगे। उचित अभिप्रेरणा के अभाव में न केवल सीखने की प्रक्रिया बल्कि स्वयं जीवन भी एक कठिन कार्य बन जाता है। तब अभिप्रेरणा एक ऐसी प्रक्रिया के रूप में कार्य करती है जिसके द्वारा बच्चों को उन परिस्थितियों का सामना करने के लिए तैयार किया जा सकता है जिनका ध्येय पूर्व निर्धारित लक्ष्यों या उद्देश्यों को प्राप्त करना है। अभिप्रेरणा वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा एक व्यक्ति को कुछ करने के लिए प्रेरित, निर्देशित या राजी किया जाता है। यह शरीर की मानसिक स्थिति है जो किसी व्यक्ति से काम करवाती है या उसकी जरूरतों को पूरा करने का प्रयास करती है। शारीरिक शिक्षा और खेल के क्षेत्र में कोई भी विद्यार्थी बिना अभिप्रेरणा के न तो खेल में भाग ले सकता है और न ही बेहतर खेल सकता है।

यदि बच्चों के बीच अच्छे संबंध बनते हैं तो उनके समूह में अभिप्रेरणा विकसित होती है और यदि मित्रता स्थापित हो जाती है तो यह संतुष्टि का स्रोत बन जाती है। शिक्षकों और छात्रों के बीच सकारात्मक संबंध जिसमें बच्चों का सम्मान किया जाता हो और उनके व्यक्तित्व को विकसित करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता हो, उनके सीखने की प्रक्रिया में एक प्रेरक कारक बन जाता है जो बच्चों के लिए एक मार्गदर्शक, एक संरक्षक और एक सूत्रधार के रूप में वयस्कों की जरूरतों को पूरा करता है। (चियारा बर्जरॉन, 1985) कई अध्ययनों से पता चलता है कि खेलों में बच्चों द्वारा भाग लेने के मुख्य कारण मौज-मस्ती करना, अपने कौशल में सुधार करना, दोस्तों के साथ रहना या नए दोस्त बनाना, उत्साह खोजना और शारीरिक रूप से फिट होना है। हालांकि, कई सवाल आंशिक या पूरी तरह से अनुत्तरित हैं। उदाहरण के लिए, क्या एक प्रतियोगिता में भाग लेने वाले बच्चे उतने ही अभिप्रेरित होते हैं जितने कि दूसरे खेलों में भाग लेने वाले बच्चे? नहीं? प्रशिक्षकों के लिए यह महत्वपूर्ण है कि वे बच्चों की वास्तविक अभिप्रेरणा को समझें।

बच्चों को खेलों के लिए अभिप्रेरित करने के लिए उन्हें वह खेल चुनने दें जो वे खेलना चाहते हैं। बच्चों पर आपके पदचिह्नों पर चलने के लिए दबाव न डालें। उन्हें विभिन्न विकल्प दें और यह तय करने दें कि उन्हें कौन सा विकल्प सबसे अच्छा लगता है। अभिभावकों अथवा शिक्षकों को बच्चों के साथ खेलने में रुचि लेनी चाहिए। अपने करीबी लोगों के साथ सक्रिय रूप से खेल गतिविधियों में भाग लेने से बच्चे सीखते भी हैं और आनंद भी लेते हैं। हालांकि, खेल खेलने में अगर बच्चों की इच्छा नहीं है तो उन पर दबाव नहीं डालना चाहिए। उनके प्रयास और समर्थन की प्रशंसा करें। सभी बच्चे प्रतिभाशाली एथलीट नहीं होते हैं, और यह ठीक भी है। जब तक वे खेल गतिविधि में आनंद नहीं लेते हैं तब तक वे अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन नहीं कर सकते हैं। उनके प्रयासों और उपलब्धियों को पुरस्कृत करना चाहिए। बच्चे के दिमाग पर गौर करना चाहिए की यह कैसे काम करता है। उन्हें खेलों में आनंद लेने दें और नई खेल गतिविधियों में शामिल होने की कोशिश करने और अपनी रुचियों को खोजने में उनका समर्थन करें। खेलकूद में आनंद लेना उनकी सबसे पहली प्राथमिकता होनी चाहिए।

शोध विषय की संबंधित साहित्य समीक्षा

डॉ. रे (2023) ने एनईपी 2020 में शारीरिक शिक्षा और खेल पर एक अध्ययन किया। इस अध्ययन ने निष्कर्ष निकाला कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 में पाठ्यक्रम के हिस्से के रूप में खेल और शारीरिक शिक्षा को शामिल करने की दृढ़ता से सिफारिश की गई है। इस प्रकार वर्तमान स्थिति में हम इस बात से इनकार नहीं कर सकते कि शारीरिक शिक्षा और खेल एक वैकल्पिक विषय है क्योंकि एनईपी 2020 में शारीरिक शिक्षा और खेल को अनिवार्य विषय के रूप में शामिल किया गया है। डिसूजा (2023) ने एनईपी 2020: शारीरिक शिक्षा एक अवलोकन पर एक अध्ययन किया था। इस अध्ययन ने निष्कर्ष निकाला कि व्यावसायिक शिक्षा पर ध्यान केंद्रित करने से बच्चों के समग्र विकास में काफी मदद मिलती है। छात्र व्यावसायिक विषय के रूप में शारीरिक गतिविधि और खेल का चयन करने में सक्षम होंगे। यह पूरी भारतीय शैक्षिक प्रणाली पर प्रकाश डालेगा क्योंकि यह बुनियादी और उच्च शिक्षा दोनों के लिए एक पूर्ण आधार है। सोनकांबले (2023) ने भारत में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में शारीरिक शिक्षा के क्षेत्र पर एक अध्ययन किया था। यह शोध पत्र भारत में राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 के ढांचे के भीतर शारीरिक शिक्षा के क्षेत्र की गंभीर रूप से जांच करता है। शारीरिक शिक्षा से संबंधित नीति के प्रावधानों और उद्देश्यों पर ध्यान देने के साथ, अध्ययन का उद्देश्य

छात्रों के समग्र विकास और व्यापक शिक्षा प्रणाली पर संभावित प्रभाव को स्पष्ट करना है। यह पत्र शारीरिक शिक्षा की अंतःविषय प्रकृति, खेल और शारीरिक गतिविधियों को बढ़ावा देने में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की भूमिका और कौशल विकास और व्यावसायिक पहलुओं में इसके योगदान का पता लगाता है। इसके अतिरिक्त, शोध एनईपी 2020 के तहत शारीरिक शिक्षा के कार्यान्वयन में चुनौतियों और अवसरों की पहचान करता है और प्रभावी प्रथाओं को प्रदर्शित करने वाले केस स्टडी प्रस्तुत करता है। एक व्यापक समीक्षा के माध्यम से, यह पत्र शारीरिक शिक्षा के लिए एनईपी 2020 के निहितार्थों के बारे में अंतर्दृष्टि प्रदान करता है।

नई शिक्षा नीति 2020

नई शिक्षा नीति 2020, भारत की शिक्षा प्रणाली में एक क्रांतिकारी बदलाव है। इसका उद्देश्य शिक्षा को अधिक समावेशी, प्रभावी और गुणवत्तापूर्ण बनाना है। नीति में 5+3+3+4 की नई संरचना लागू की गई है, जो छात्रों के समग्र विकास पर जोर देती है। उच्च शिक्षा में मल्टीपल एंट्री और एग्जिट सिस्टम और व्यावसायिक शिक्षा को बढ़ावा दिया गया है। शिक्षकों के निरंतर विकास और डिजिटल शिक्षा पर भी विशेष ध्यान दिया गया है। शोध और नवाचार को बढ़ावा देने के लिए राष्ट्रीय अनुसंधान फाउंडेशन की स्थापना की जाएगी। इस नीति का मुख्य उद्देश्य है कि भारतीय शिक्षा प्रणाली को वैश्विक मानकों के अनुरूप बनाकर छात्रों को भविष्य के लिए तैयार करना है।

नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भारत सरकार द्वारा 29 जुलाई 2020 को लागू की गई एक व्यापक नीति है, जिसका उद्देश्य भारत की शिक्षा प्रणाली में सुधार करना और इसे 21वीं सदी की जरूरतों के अनुरूप बनाना है। यह नीति 1986 की शिक्षा नीति को बदलकर आई है और लगभग 34 साल बाद भारतीय शिक्षा में व्यापक बदलाव लाने का प्रयास करती है। नवीन शिक्षा नीति 2020 का मुख्य उद्देश्य शिक्षा को अधिक समावेशी, लचीला और आधुनिक बनाना और शिक्षा प्रणाली को रोजगारोन्मुख और ज्ञान आधारित बनाना है।

नई शिक्षा नीति 2020 भारत में शिक्षा के क्षेत्र में एक बड़ा बदलाव लाने के लिए सरकार द्वारा लाई गई एक महत्वपूर्ण नीति है। इस नीति को 29 जुलाई 2020 को भारत के केंद्रीय मंत्रिमंडल द्वारा शुरू किया गया था। इस नीति को 1986 की राष्ट्रीय शिक्षा नीति से बदलने के लिए लागू किया गया है। इसका उद्देश्य शिक्षा को सभी के लिए सुलभ, गुणवत्तापूर्ण और समग्र बनाना है।

नई शिक्षा नीति की मुख्य विशेषताएं

नई शिक्षा नीति 2020 से शिक्षा प्रणाली में व्यापक सुधार किए गए हैं। इसकी मुख्य विशेषताएं निम्नलिखित हैं:

- **शिक्षा की संरचना:** अब पुरानी शिक्षा नीति के बजाय 5+3+3+4 संरचना लागू की गई है, जिसमें फाउंडेशनल, प्रिपरेटरी, मिडिल और सेकेंडरी स्टेज शामिल हैं।
- **बहु-प्रवेश और बहु-निर्गम:** उच्च शिक्षा में छात्रों को अपनी पढ़ाई के दौरान कई बार प्रवेश और निकास का विकल्प मिलेगा, जिससे वे अपनी शिक्षा को अधिक प्रभावी तरीके से पूरा कर सकेंगे।
- **डिजिटल शिक्षा:** ऑनलाइन और डिजिटल शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए विशेष ई-लर्निंग प्लेटफॉर्म और डिजिटल संसाधन उपलब्ध कराए जाएंगे।
- **शिक्षकों का विकास:** शिक्षकों के निरंतर पेशेवर विकास के लिए नियमित प्रशिक्षण और कार्यशालाओं का आयोजन किया जाएगा।

एनईपी 2020 के मुख्य उद्देश्य:

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 पहुंच, समानता, गुणवत्ता और जवाबदेही के मूलभूत सिद्धांतों पर बनी है। इसके प्रमुख उद्देश्यों को इस प्रकार संक्षेप में प्रस्तुत किया जा सकता है:

- **समग्र विकास:** एनईपी बहु-विषयक दृष्टिकोण के माध्यम से संज्ञानात्मक, सामाजिक-भावनात्मक और शारीरिक विकास पर जोर देकर समग्र विकास को बढ़ावा देने पर केंद्रित है।

- **शिक्षा का सार्वभौमिकरण:** नीति सभी को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने, प्रारंभिक बचपन से उच्च शिक्षा तक समान पहुंच और समावेशन सुनिश्चित करने की परिकल्पना करती है।
- **लचीली शिक्षा:** एनईपी लचीली और छात्र-केंद्रित शिक्षा की वकालत करती है जो विविध शिक्षण शैलियों को समायोजित करती है और महत्वपूर्ण सोच और समस्या-समाधान कौशल को बढ़ावा देती है।
- **कौशल विकास:** छात्रों को गतिशील नौकरी बाजार और उद्यमशीलता के अवसरों के लिए तैयार करने के लिए शिक्षा में कौशल विकास को एकीकृत करने पर जोर दिया जाता है।
- **बहुभाषावाद:** नीति प्रभावी शिक्षण और सांस्कृतिक संरक्षण की सुविधा के लिए शिक्षा में बहुभाषावाद और क्षेत्रीय भाषाओं के उपयोग को बढ़ावा देती है।
- **प्रौद्योगिकी एकीकरण:** शैक्षिक परिणामों को बढ़ाने के लिए प्रभावी शिक्षण, सीखने और मूल्यांकन के लिए प्रौद्योगिकी का लाभ उठाना नीति का एक केंद्रीय पहलू है।

एनईपी 2020 तथा शारीरिक शिक्षा

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में शारीरिक शिक्षा के महत्व को कई तरह से रेखांकित किया गया है, जैसे कि:

- शारीरिक शिक्षा बच्चों को स्वस्थ और फिट रहने में मदद करती है।
- यह उन्हें मानसिक रूप से भी स्वस्थ रहने में मदद करती है।
- यह उन्हें सामाजिक रूप से विकसित होने में मदद करती है।
- यह उन्हें टीम वर्क और नेतृत्व जैसे कौशल सीखने में मदद करती है।
- यह उन्हें तनाव कम करने और एकाग्रता बढ़ाने में मदद करती है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में शारीरिक शिक्षा को महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। नीति में कहा गया है कि शारीरिक शिक्षा बच्चों के समग्र विकास के लिए आवश्यक है। यह न केवल उन्हें स्वस्थ रहने में मदद करता है, बल्कि उनके मानसिक और सामाजिक विकास में भी योगदान देता है। नीति में शारीरिक शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए कई प्रावधान किए गए हैं, जिनमें से कुछ इस प्रकार हैं:

- शारीरिक शिक्षा को स्कूली शिक्षा के पाठ्यक्रम का अभिन्न अंग बनाया जाएगा।
- सभी स्कूलों में शारीरिक शिक्षा के शिक्षकों की नियुक्ति की जाएगी।
- शारीरिक शिक्षा के लिए पर्याप्त बुनियादी ढांचा विकसित किया जाएगा।
- शारीरिक गतिविधियों और खेलों को बढ़ावा दिया जाएगा।
- योग और ध्यान को भी शारीरिक शिक्षा का हिस्सा बनाया जाएगा।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में शारीरिक शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए कई सुझाव दिए गए हैं, जिनमें से कुछ इस प्रकार हैं:

- स्कूलों को शारीरिक शिक्षा के लिए पर्याप्त समय और संसाधन आवंटित करने चाहिए।
- स्कूलों को शारीरिक शिक्षा के शिक्षकों को प्रशिक्षित करना चाहिए।
- स्कूलों को छात्रों को विभिन्न प्रकार की शारीरिक गतिविधियों और खेलों में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए।
- स्कूलों को योग और ध्यान को भी शारीरिक शिक्षा का हिस्सा बनाना चाहिए।
- स्कूलों को समुदाय को शारीरिक शिक्षा के महत्व के बारे में जागरूक करना चाहिए।

निष्कर्ष

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में शारीरिक शिक्षा को महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। नीति में शारीरिक शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए कई प्रावधान किए गए हैं। यह नीति बच्चों के समग्र विकास के लिए शारीरिक शिक्षा के महत्व को रेखांकित करती है। यदि इस नीति को प्रभावी ढंग से लागू किया जाता है, तो यह बच्चों के स्वास्थ्य और कल्याण में महत्वपूर्ण योगदान दे सकती है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

- गुप्ता सोनल और अच्युत पी. (2021), भारत की राष्ट्रीय शिक्षा नीतियां: उच्च शिक्षा के संबंध में एक तुलनात्मक अध्ययन, हंस शोध सुधा, वॉल्यूम-1, अंक-3, पृष्ठ सं. 20-27.
- श्रीमती एच, कृष्णमूर्ति ए (2020), एजुकेशन ऑफ इंडिया इन प्री-इंडिपेंडेंट योर, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ साइंटिफिक एंड टेक्नोलॉजी रिसर्च, वॉल्यूम-9, अंक-01, आई एस एस एन 2277-8616 2250 पृष्ठ सं. 2250-2254
- साहू बी., पटनायक एस.और पात्रा आर. (2019), ओडिशा के संदर्भ में स्वतंत्रता पूर्व भारत में शिक्षा प्रणाली, अंतर्राष्ट्रीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान जर्नल, आईएसएसएन 2319-3565, वॉल्यूम 8(2), पृष्ठ सं.7-12.
- Navi Chidanand (2015), An overview on Educational Commissions/Policies before Independence in India, Global English-Oriented Research Journal (GEORJ), ISSN 2454-5511, Pp.52-59
- विजयवर्गीय शंकर (2005), भारतीय शिक्षा का इतिहास, राजपाल एंड सन्स प्रकाशन, आईएसबीएन : 81-7028-201-2
- Ravat Pyarelal (1955). Bharatiya Shiksha Ka Itihas. Publisher Ram Prasad and Sons. retrieved from digitallibraryindia; JaiGyan on august 26,2022
- MHRD . (1986) . National Education Policy 1986 . New Delhi : MHRD , Govt. of India.
- Ministry of Education (2020). National Education Policy 2020 . New Delhi : Ministry of Education, Govt. of India.
- MHRD (1987) Report of the Committee for Review of National Policy on Education, New Delhi : MHRD, Govt. of India.
- MHRD (1992). National Policy on Education (revised). New Delhi : MHRD, Govt. of India.
- अहमद, एम.डी., यान हो डब्ल्यू के., अहमद ए.एच. और डॉस-सैंटोस एल. जे.एम. (2020) फिजिकल एक्टिविटी एंड मोटिवेशन टू पार्टिसिपेट इन स्पोर्ट्स एज ट्रांजिशन एंड जेंडर गैप अमंग एडोलैसैंट्स इन इंडिया, कैसैंट मनोविज्ञान, 7रू 1, 1798633, डीओआईरू 10.1080/23311908.2020.1798633.
- शिरोत्रिय अवधेश कुमार, बोस अमरनाथ (2020), स्टूडेंट मोटिवेशन टू पार्टिसिपेट इन स्पोर्ट्स एक्टिविटीरू आइडेंटिफाई अपोर्चुनिटीज टू इम्प्रूव द एजुकेशनल सिस्टम इन इंडिया, जर्नल ऑफ रोमानियाई स्पोर्ट्स मेडिसिन सोसाइटी, मेडिसिना स्पोर्टिवा वॉल्यूम – XVI, नंबर 2, पृष्ठ सं. 3228-3237
- अथानासोपोलू पी., गोडॉटेली, के. (2020), स्पोर्ट्स मोटिवेशन इन आउटडोर स्पोर्ट्स एक्टिविटीज, इनरू कावौरा, ए., केफलोनाइटिस, ई., थियोडोरिडिस, पी. (एडिटर) स्ट्रेटेजिक इनोवेटिव मार्केटिंग एंड टूरिज्म, व्यापार और अर्थशास्त्र, स्प्रिंगर, चाम। https://doi-org/10-1007/978&3&030&36126&6_27

- खैरुल अदली, नूरुल फज़ीरा और ज़ैनी, बहतियार और यूसुफ, ज़हायु और मंसूर, रोज़ नालिनी और ज़ैनुद्दीन, नोरज़ैरिया और नसुहा, हानुन (2020) कंस्ट्रक्टिंग मोटिवेशन फॉर स्पोर्ट्स एक्टिविटीज अमंग कॉलेज स्टूडेंट्स सीबी-एसईएम पाथ मॉडल, आणविक जैव प्रौद्योगिकी के यूरोपीय जर्नल ऑफ मॉलिक्यूलर बायोटेक्नोलॉजी, 7. 2299–2313.
- कुकुकिबिस, हुसैन और गुल, मेहमत (2019) स्टडीज ऑन मोटिवेशनल लेवल ऑफ हाई स्कूल स्टूडेंट्स इन स्पोर्ट्स बाय सम वेरिएबल्स, यूनिवर्सल जर्नल ऑफ एजुकेशनल रिसर्च, 7- 839&847A 10-13189/ujer-2019-070325
- ग्लिन सी. रॉबर्ट्स, क्रिस्टीना जी.एल. नेरस्टैड और पी. निकोलस लेमेयर (2018) मोटिवेशन इन स्पोर्ट एंड परफॉर्मेंस। ऑक्सफोर्ड रिसर्च इनसाइक्लोपीडिया, मनोविज्ञान, <https://doi-org/10-1093/acrefore/9780190236557-013-150>

